कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



सामूहिक अपनेपन का भाव

- राष्ट्रवाद की भावना तब पनपती है जब लोग ये महसूस करने लगते हैं कि वे एक ही राष्ट्र के अंग हैं।
- वे एक दूसरे को एकता के सूत्र में बाँधने वाली कोई साझा बात ढूँढ लेते हैं।
- तब विभिन्न समुदायों, क्षेत्रों व भाषाओं के होने पर भी सामूहिक अपनेपन का भाव विकसित हो जाता है।
- भारत में सामूहिक अपनेपन की यह भावना संयुक्त संघर्षों के चलते पैदा हुई थी।
- अनेक ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रियाऐं भी थीं जिनसे राष्ट्रवाद लोगों की कल्पना और दिलोदिमाग पर छा गया था।

(i) इतिहास व साहित्य
(ii) लोक कथाएँ व लोकगीत
(iii) चित्र व प्रतीक



बालगंगाधर तिलक, 20वीं सदी के शुरू की तस्वीर तिलक एकता के प्रतीकों से घिरे हुए हैं। चित्र के चारों ओर विभिन्न धर्मों के पवित्र स्थान (मंदिर, मस्जिद एवं चर्च)? चित्रित किये गये हैं।

राष्ट्र की छवि :-

- राष्ट्र की पहचान सबसे ज्यादा किसी तस्वीर में अंकित की जाती है।
- इस तस्वीर के द्वारा हम राष्ट्र की छवि गढ़कर उसे पहचान सकते हैं।
- 20वीं सदी में राष्ट्रवाद के विकास के साथ भारत की पहचान भी भारत माता की छवि का रूप लेने लगी।
- इस छवि के निर्माण का आरंभ बंकिम चन्द चट्टोपाध्याय ने किया।
- 1870 के दशक में उन्होंने मातृभूमि की स्तुति के रूप में 'वन्देमातरम' गीत लिखा था। जिसे बाद में उन्होंने अपने उपन्यास आनन्दमठ में शामिल कर लिया जिसे बंगाल में स्वदेशी आंदोलन में खूब गाया गया।
- स्वदेशी आंदोलन की प्रेरणा से अवनीन्द्र नाथ

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

टैगोर ने भारत माता की विख्यात छवि चित्रित की।



- इस पेंटिंग में भारत माता को एक संन्यासिनी के रूप में दर्शाया गया है।
- वह शांत, गंभीर, दैवी और अध्यात्मिक गुणों से युक्त दिखाई देती है।
- आगे चल कर जब इस छवि को बड़े पैमाने पर तस्वीरों में उतारा जाने लगा तो भारत माता की छवि भी विभिन्न रूप ग्रहण करती गई।
- इस मातृ छवि के प्रति श्रद्धा को ही राष्ट्रवाद में आस्था का प्रतीक माना जाने लगा।

भारत माता – अवनीन्द्रनाथ टैगोर : 1905
यहाँ दर्शायी गई माँ की छवि-शिक्षा, भोजन और कपड़े दे रही है तथा एक हाथ में माला उसके संन्यासी गुण को रेखांकित करती है।
अपने पूर्ववर्ती रवि वर्मा की भाँति अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने भी ऐसी चित्र शैली विकसित करने का प्रयास किया जिसे सच्चे अर्थों में भारतीय माना जा सके।

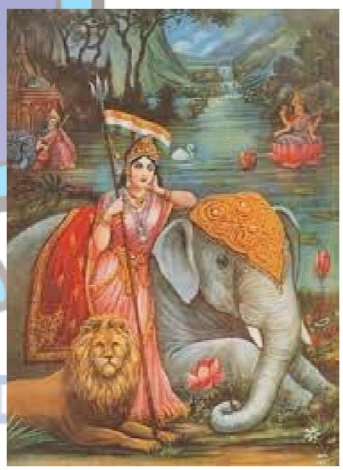

भारत माता

भारत माता की यह छवि अवनीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा चित्रित छवि के बिल्कुल विपरीत है। यहाँ भारत माता के हाथों में त्रिशूल है और वह हाथी व शेर के बीच खड़ी है। यह दोनों ही शक्ति व सत्ता के प्रतीक है।

राष्ट्रवाद तथा लोक-कथाएँ :-

- राष्ट्रवाद का विचार भारतीय लोक कथाओं को पुनः जीवित करने से भी मजबूत हुआ।
- 19वीं सदी के आखिर में भाटों व चारणों द्वारा सुनाई जाने वाली लोककथाओं को राष्ट्रवादियों ने इकट्ठा करना शुरू कर दिया।
- वे लोकगीतों को भी इकट्ठा करने के लिए गाँव-गाँव घूमने लगे।
- उनका मानना था कि यही कहानियाँ हमारी उस संस्कृति की सही तस्वीर पेश करती है जो बाहरी ताकतों के प्रभाव से दूषित हो चुकी है।
- अपने अतीत पर गौरव करने के लिए इन लोक परंपराओं को जीवित रखना जरूरी था।
- बंगाल में खुद रविन्द्र नाथ टैगोर लोकगीत बालगीत और मिथकों को इकट्ठा करने निकल पड़े।
- उन्होंने लोक-परम्पराओं को पुनर्जीवित करने वाले आंदोलन का नेतृत्व किया।
- मद्रास में नटेसा-शास्त्री ने 'द फोकलोर्स ऑफ सदर्न इंडिया' के नाम से तमिल लोक कथाओं का विशाल संकलन 4 खंडों में प्रकाशित किया।
- उनका मानना था कि लोक कथाएँ राष्ट्रीय साहित्य होती हैं, यह लोगों के असली विचारों और विशिष्टताओं की सबसे विश्वसनीय अभिव्यक्ति है।

राष्ट्रवाद तथा झंडा :-

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- जैसे-जैसे राष्ट्रीय आन्दोलन आगे बढ़ा, राष्ट्रवादी नेता लोगों में राष्ट्रवाद की भावना भरकर एकजुट करने के लिए विभिन्न चिन्हों और प्रतीकों का उपयोग करने लगे।
- बंगाल में स्वदेशी आंदोलन के दौरान एक तिरंगा झंडा (हरा, पीला, लाल) तैयार किया गया।
- इसमें ब्रिटिश भारत के 8 प्रांतों को दर्शाते हुए 8 कमल के फूल और हिन्दुओं व मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करते हुए एक अर्द्धचन्द्र दर्शाया गया था।
- 1921 तक गाँधीजी ने भी स्वराज का झंडा तैयार कर लिया था यह भी तिरंगा था। (हरा, सफेद, लाल)
- इसके मध्य में गाँधीवादी प्रतीक चरखे को जगह दी गई थी जो स्वावलम्बन का प्रतीक था।
- जुलुसों में यह झंडा थामे चलना शासन के प्रति अवज्ञा का प्रतीक था।

राष्ट्रवाद तथा इतिहास :-

- राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने का एक और साधन इतिहास की पुनर्व्याख्या थी।
- 19वीं सदी के अंत तक भारतीय यह महसूस करने लगे थे कि राष्ट्र के प्रति गर्व का भाव जागृत करने के लिए भारतीय इतिहास को अलग ढंग से पढ़ाया जाना चाहिए।
- अंग्रेजों की नजर में भारतीय पिछड़े हुए और आदिम लोग थे जो अपना शासन खुद नहीं सँभाल सकते।
- भारतीयों ने गौरवमयी प्राचीन युग के बारे में लिखना शुरू कर दिया जब -

कला और वास्तुशिल्प, विज्ञान और गणित, धर्म और संस्कृति, कानून और दर्शन, हस्तकला और व्यापार फल फूल रहे थे।

- उनका कहना था कि भारत के महान युग के बाद पतन का समय आया और भारत को गुलाम बना लिया गया।
- इस राष्ट्रवादी इतिहास के द्वारा ब्रिटिश शासन में दुर्दशा से मुक्ति के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया जाता था।
- लेकिन जिस अतीत का गौरवगान किया जा रहा था वह हिंदुओं का अतीत था। जिन छवियों का सहारा लिया जा रहा था वे हिंदु प्रतीक थे।
- इसलिए अन्य समुदायों के लोग अलग-थलग महसूस करने लगे थे।

निष्कर्ष

- अंग्रेजों के खिलाफ बढ़ता गुस्सा विभिन्न भारतीय समूहों और वर्गों को स्वतंत्रता के संघर्ष में खींच रहा था।
- महात्मा गाँधीजी व कांग्रेस ने अनेक लोगों की परेशानियों को इस आंदोलन में समाहित करने का प्रयास किया।
- जैसा कि हमने देखा इस आंदोलनों में भाग लेने वाले विभिन्न समूहों की अपनी अलग-अलग आकांक्षाऐं एवं अपेक्षाऐं थीं।
- यद्यपि कांग्रेस ने यह भी प्रयास किया कि एक समूह की माँगों के कारण दूसरा समूह दूर न चला जाये।
- इसी कारण आंदोलन के भीतर अक्सर बिखराव आ जाता था।
- फिर भी जो राष्ट्र उभर रहा था वह अंग्रेजी शासन से मुक्ति की चाह रखने वाली बहुत सारी आवाजों

Download Mission Cyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

का पुंज था।

भारत छोड़ो आंदोलन

- क्रिप्स मिशन की असफलता एवं द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभावों से भारत में व्यापक असंतोष फैल गया।
- फलस्वरूप गाँधीजी ने एक आंदोलन शुरू किया। जिसमें उन्होंने अंग्रेजों को पूरी तरह से भारत छोड़ने पर जोर दिया।
- 14 जुलाई 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति ने 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पारित कर दिया।
- इसमें सत्ता का भारतीयों को हस्तांतरण एवं भारत छोड़ने की माँग की गई।
- 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस के बंबई अधिवेशन में पूरे देश में व्यापक रूप से अहिंसक जन संघर्ष का आह्वान किया गया।
- इसी अवसर पर गाँधीजी ने 'करो या मरो' का प्रसिद्ध भाषण दिया था।
- 'भारत छोड़ो' के इस आह्वान से देश में राज्य व्यवस्था को ठप कर लोग स्वत: ही आंदोलन में कूद पड़े।
- लोगों ने हड़तालें की; राष्ट्रीय गीतों व नारों के साथ प्रदर्शन किये एवं जुलूस निकाले।
- यह वास्तव में एक व्यापक-जन आंदोलन था जिसमें छात्र, मजदूर, किसान एवं हजारों साधारण लोगों ने हिस्सा लिया।
- इसमें नेताओं की सक्रिय भागीदारी भी देखी गई।
- जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया के साथ-साथ अनेक महिलाओं अरूणा आसफ अली, बंगाल से मातांगिनी हाजरा, असम से कनकलता बरूआ व उड़ीसा से रमा देवी ने भाग लिया।
- अंग्रेजों द्वारा अत्यधिक बल प्रयोग के बावजूद इसे दबाने में एक वर्ष से अधिक समय लग गया।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here